(समयसार) ३२० गाथा, जयसेनाचार्य की टीका चलती है। उसमें यह आया है कि आत्मा जो ध्रुव ज्ञायक चैतन्य द्रव्यस्वभाव है, उसे यहाँ पारिणामिक सहजभाव, पर्याय की अपेक्षारहित भाव वह चीज़ जो है, उसे विषय करनेवाली भावना, उसको यहाँ क्या भाव है, उसे यहाँ कहते हैं। वह विषय करनेवाली अवस्था किस भावरूप है ? समझ में आया ? पाँच भाव हैं पाँच। त्रिकाली स्वभाव तो पारिणामिकभाव है, ध्रुवस्वभाव (है) और उसका ध्येय बनाकर-उसे विषय करके जो पर्याय प्रगट हुई, वह पर्याय किस भाव से है - ऐसा यहाँ प्रश्न है। तो कहते हैं कि वह भाव उपशमभाव, क्षयोपशमभाव, क्षायिकभाव इस पर्याय के नाम तीन भाव हैं। समझ में आया ?

यहाँ आया देखो! **वह परिणमन आगमभाषा से..** शास्त्र की जो भाषा है, उस कारण से (भाषा से) '**औपशमिक**',.. भगवान आत्मा-अपना आत्मा आनन्द का ध्रुवधाम (है), उस ओर का आश्रय लेकर.. आश्रय शब्द ग्यारहवीं गाथा में से आया है। समझ में आया ? और 'विषय' (यह) भाषा यहाँ है। सूक्ष्म विषय है। जो आत्मा त्रिकाली परम स्वभावभाव है। जो वर्तमान पर्याय-अवस्था है, वह राग में एकत्व थी। वह वर्तमान की पर्याय-अवस्था त्रिकाल को विषय बनाकर वस्तु में एकाग्र होती है-ध्रुव में एकाग्र होती है। एकाग्रता का अर्थ-उसमें विषय लेकर अभेद (होती है)। अभेद का अर्थ पर्याय और द्रव्य एक नहीं हो जाते। समझ में आया ? परन्तु यहाँ राग में एकत्व था, वह यहाँ (अन्दर एकत्व) हुआ, उसे अभेद कहा जाता है। सूक्ष्म विषय है। समझ में आया ? लालचन्दभाई ने माँग की है कि भाई, सबेरे-दोपहर यह चलाना।

श्रोता : ऐसा ही चलना चाहिए।

पूज्य गुरुदेवश्री : हैं ? ऐसा ही चलना चाहिए, अच्छा। समझ में आया ? जैनदर्शन क्या है, जैनशासन क्या है, वह बात चलती है। जैनशासन.. जो त्रिकाली ज्ञायकभाव है,

उसमें एकाग्रता होना। भावमति-भावश्रुतज्ञान द्वारा प्रत्यक्षरूप से अन्दर में एकाग्र होना, वह जैनशासन (है)। जैनशासन कहीं आत्मा की पर्याय से पृथक् रहता है - ऐसा नहीं है। समझ में आया? जैनशासन, वह वीतरागस्वरूप त्रिकाल जो है-जिनबिम्ब त्रिकाल ध्रुव है, जिसे यहाँ पारिणामिकभाव कहा। वह अकषाय-अकषायरसस्वरूप जिनबिम्बस्वरूप आत्मा है। वही वास्तव में आत्मा कहने में आता है। उस आत्मा को विषय करनेवाली जो पर्याय है, उस पर्याय को जैनशासन कहते हैं। समझ में आया? उसमें जो राग और दया, दान और विकल्प-फिकल्प वह नहीं आता। आहाहा! क्या लिखा है इसमें?

तीन भाव-**ऐसे भावत्रय कहा जाता है,..** आगमभाषा से। उपशमभाव, शान्तरस का वेदन, क्षयोपशमभाव, वह भी शान्तरस का वेदन और क्षायिकभाव, उग्र शान्तरस का वेदन, ये त्रयभाव मोक्ष का कारण अथवा निश्चयमोक्षमार्ग इन तीन भावस्वरूप है। समझ में आया? है न शास्त्र सामने? पन्ने हैं या नहीं?

मुमुक्षु : तीन नाम पाड़ दिये।

पूज्य गुरुदेवश्री : नाम पाड़ दिये। (शान्त) शान्त.. क्योंकि भगवान आत्मा शान्तरस का पिण्ड ही है न? अकषायस्वभाव, वीतरागस्वभाव से भरा पड़ा द्रव्यस्वभाव है। उसका शान्तरस शक्ति में भरा है। शक्ति से भव्यत्व की व्यक्ति। उस स्वभाव में जो शान्त-वीतरागता पड़ी है, उसमें एकाग्रता होकर पर्याय अर्थात् वर्तमान दशा में शान्तदशा प्रगट होना, वह निश्चयमोक्षमार्ग है, वह भावना है, वह परिणाम है, वह पर्याय है। वह **अध्यात्मभाषा से 'शुद्धात्माभिमुख परिणाम',..** भगवान आत्मा,.. देखो! यहाँ अभिमुख शब्द पड़ा है। यहाँ विषय कहा।

शुद्ध वस्तु जो त्रिकाल ध्रुव है, उसको विषय करनेवाली भावना कहो या शुद्ध-आत्मा-अभिमुख परिणाम कहो। समझ में आया? मार्ग-मूलमार्ग यह है। यह क्या कहते हैं? इस अभिमुख परिणाम से प्राप्त होता है, वह बात तो चलती है।

मुमुक्षु : अभिमुख परिणाम कैसे करना?

पूज्य गुरुदेवश्री : अब करना, अभिमुख करना, वहाँ करता है, वह यहाँ करना - फिर कैसे करना? भाई! कैसे करना कहाँ आया?

मुमुक्षु : आपने कल बताया था न, खाना कैसे खाना ?

पूज्य गुरुदेवश्री : कौन खाता है ? अभी राग करता है तो राग-परसन्मुख की दशा का अनुभव है और राग का एकान्त अनुभव, वह तो मिथ्यात्व का अनुभव है। समझ में आया ?

भगवान आत्मा शान्तरस आनन्द.. देखो न ! इन तीन भाव को अध्यात्मभाषा से शुद्धात्माभिमुख परिणाम-शुद्ध आत्मा के सन्मुख परिणाम (कहा है)। सन्मुख करना, वह करना (है)। राग और पर्यायबुद्धि से हटकर शुद्धात्मा-अभिमुख परिणाम करना, उस परिणाम में आत्मा की प्राप्ति है। उस परिणाम को तीन भाव से पहिचाना जाता है, उपशम, क्षयोपशम, और क्षायिक। उस परिणाम को-पर्याय को मोक्षमार्ग की पर्याय कहने में आता है। समझ में आया ?

'**शुद्धात्माभिमुख परिणाम**',.. शुद्ध भगवान आत्मा के सन्मुख परिणाम, उसका नाम उपशम, क्षयोपशम और क्षायिक आगमभाषा से (कहा जाता है) और अध्यात्मभाषा से ध्रुवस्वभाव के समीप झुकना.. पर्याय से बात करे तो कैसे करे ? समझ में आया ? पर्याय को-जो परिणाम है, उसे शुद्धात्मा की ओर झुकाना, वह शुद्धात्मा-अभिमुख परिणाम है। क्या किया आत्मा ने ? करना क्या ? कि परिणाम को स्वभाव के सन्मुख परिणाम, वह करना है। आहाहा ! इसमें अनन्त पुरुषार्थ है। समझ में आया ? इस शुद्धात्मा-अभिमुख परिणाम का नाम सम्यग्दर्शन, उसका नाम सम्यग्ज्ञान, उसका नाम सम्यक्चारित्र है, वह निश्चयमोक्षमार्ग (है)। '**शुद्धोपयोग**'.. यह दूसरा नाम। तीन भाव को अध्यात्मभाषा से शुद्धोपयोग कहने में आता है।

देखो, उपशमभाव को भी शुद्धोपयोग कहते हैं। उसमें आया या नहीं वह ? नन्दकिशोरजी ! वे लोग कहते हैं—नहीं, शुद्धोपयोग नहीं। यहाँ उपशमभाव को भी शुद्धोपयोग कहते हैं, क्षयोपशमभाव को भी शुद्धोपयोग कहते हैं और क्षायिकभाव को भी शुद्धोपयोग कहते हैं। भले शुद्धोपयोग की शुद्धि की वृद्धि है। क्षायिक में वृद्धि आदि हो, परन्तु हैं तो तीनों शुद्धोपयोगभाव। आहाहा ! दया, दान, व्रत, भक्ति का परिणाम, वह तो शुभ उपयोग है; वह शुभ उपयोग, धर्म नहीं है और वह धर्म का कारण भी नहीं है। समझ में आया ? धर्म ऐसा जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र है, उसका अवलम्बन / विषय तो ध्रुव है। वह कहा न ? इसलिए वहाँ अभिमुख करना है।

दृष्टि का ध्येय द्रव्य में है। अनन्त पुरुषार्थ है, वह कोई साधारण बात नहीं है, वह कहीं बोलने से प्राप्त नहीं होता। ऐसे धारणा हो जाये कि यह ऐसे प्राप्त होता है, वह कहीं धारणा से प्राप्त नहीं होता।

मुमुक्षु : आत्मचिन्तन से प्राप्त हो जायेगा।

पूज्य गुरुदेवश्री : चिन्तन का अर्थ एकाग्रता। चिन्तन का अर्थ विकल्प, वह चिन्तन, वह चिन्तन नहीं है। समझ में आया? तो कहते हैं, उसको शुद्धोपयोग.. मोक्षमार्ग को शुद्धोपयोग कहते हैं। शुद्धोपयोग को मोक्षमार्ग कहते हैं और शुद्धोपयोग को तीन भाव कहते हैं और तीन भाव को शुद्धोपयोग कहते हैं। समझ में आया? विशेष तो वह द्रव्यसंग्रह में है, है न भाई! द्रव्यसंग्रह दूसरा है, ऐई? हाँ है, उसमें नाम है और द्रव्यसंग्रह में नाम है। इसमें तो २०४ पृष्ठ, या तो ५७ गाथा होगी। ठीक से पता नहीं। यह ५६, ५६ गाथा में है।

मा चिट्ठह मा जंपह मा चिन्तह किंवि जेण होइ थिरो।
अप्पा अप्पम्मि रओ इणमेव परं हवे ज्झाणं॥५६॥

देखो, उसमें है। यहाँ पैराग्राफ है, देखो! उस परमध्यान में स्थित हुए जीवों को.. है? है भाई? उस परमध्यान में स्थित हुए जीवों को.. द्रव्यसंग्रह है न? यह द्रव्यसंग्रह है, सेठ को दो, पढ़े तो सही कभी? यह तो ख्याल रखेगा। है? द्रव्यसंग्रह है?

मुमुक्षु : लेता आया हूँ।

पूज्य गुरुदेवश्री : लेते आये हो, लो यह ठीक किया। तीन-चार थे। समझ में आया? क्या कहते हैं। परमध्यान में स्थित हुए जीवों को.. देखो, भगवान आत्मा ध्रुव चैतन्यस्वरूप में एकाग्र होकर परमध्यान किया। ऐसे स्थित हुए जीवों को वीतराग परमानन्द सुख प्रतिभासित होता है। है? उसमें है? ५६ गाथा। समझ में आया? वीतराग परमानन्द सुख प्रतिभासित होता है। आहाहा! क्या कहते हैं? कि अपने शुद्ध ध्रुवज्ञायक परमस्वभाव के सन्मुख परिणाम करने से वीतराग परमानन्द सुख प्रतिभासित होता है। उसमें रागरहित आनन्द का अनुभव आता है। समझ में आया? आहाहा! गजब बात, भाई! यही निश्चय मोक्षमार्गस्वरूप है। वही निश्चयमोक्षमार्गस्वरूप है। जिसे यहाँ शुद्धात्मा-अभिमुख परिणाम कहा, शुद्धोपयोग कहा, वही निश्चय मोक्षमार्गस्वरूप है। यही निश्चय मोक्षमार्ग-यथार्थ

मोक्षमार्ग का स्वरूप है। व्यवहारमोक्षमार्ग है, वह तो विकल्प है, वह कोई मोक्षमार्ग नहीं है। समझ में आया?

दूसरे पर्याय नामों से क्या-क्या कहलाता है, देखो! उसे शुद्ध आत्मा का स्वरूप कहते हैं। है? वही शुद्धात्मस्वरूप है। है पर्याय, परन्तु वह पर्याय उसकी है, इस कारण से अभेद करके वह शुद्ध-आत्मा-अभिमुख परिणाम अथवा उपशम, क्षयोपशम क्षायिकभाव, वह यहाँ त्रिकाल ज्ञायकभाव सन्मुख हुआ है तो उस परिणाम को शुद्धात्मा का स्वरूप भी कहने में आता है। पुण्य-पाप विकल्प, वह शुद्धात्मा का स्वरूप नहीं है, इतना बताने को कहा है। है तो पर्याय। नवरंगभाई!

मुमुक्षु : इतना निषेध करते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री : इतना निषेध करते हैं, इस अपेक्षा से। समझ में आया?

लो, वही परमात्मा का स्वरूप है। आहाहा! परमात्मा-जिसमें पर्याय में प्रगट हुआ, परमात्मा जो शुद्ध त्रिकाली परमात्मा अपना निजस्वरूप निजपरमात्मा-अभिमुख परिणाम करके जो प्रगट परिणाम हुआ, वही परमात्मा का ही स्वरूप है। समझ में आया? इसका नाम मोक्ष का मार्ग है। आहाहा! समझ में आया? वह परमात्मा का स्वरूप है। चौथी लाईन है नीचे। वही एकदेश में प्रगटतारूप ऐसे विवक्षित एकदेश शुद्ध निश्चयनय से.. क्या कहते हैं? वस्तु तो त्रिकाल ध्रुव शुद्ध है। एक अंश से प्रगट हुआ, एकदेश प्रगट हुआ, मोक्ष भी एकदेश प्रगट हुआ है। सारा द्रव्य तो पर्याय में प्रगट होता नहीं। समझ में आया?

यह कहनेवाले एकदेश शुद्धनिश्चयनय से, एक भाग शुद्धनिश्चयनय से निज शुद्ध आत्मा के ज्ञान से उत्पन्न सुखमय हुआ अमृत जल का सरोबर है। शुद्धनिश्चयनय से-ऐसा कहा, उसमें शुद्ध आत्मा का स्वरूप वही परमात्मास्वरूप, वही एकदेश प्रगटतारूप विवक्षित एकदेश शुद्धनिश्चयनय से निज शुद्ध आत्मा; वही ज्ञान से उत्पन्न सुख; वही अमृत जल का सरोबर। आहाहा! भगवान आत्मा अमृत जल का तो सागर है। उसमें अन्तर्मुख होकर सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान जहाँ हुआ तो अन्तर में-पर्याय में आनन्द का सरोबर उछल गया। समझ में आया? आनन्द का सरोबर पर्याय में उछल गया। पर्याय में-आनन्द का ज्वार आया (ज्वार को गुजराती में) भरती कहते हैं न? क्या? बाढ़, बाढ़...

आनन्द भगवान आत्मा पूर्णानन्द का नाथ उसके सन्मुख परिणाम हुआ, उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक शास्त्रभाषा से; अध्यात्मभाषा से अन्तर्मुख परिणाम हुआ। वह अमृत जल का सरोबर छलक गया। बाढ़... (छलक गया) छलक कहते हैं न? उछल गया, लो!

निजशुद्ध आत्मा का सरोबर, उसमें रागादि मल से रहित होने के कारण वह परमहंसस्वरूप है। आहाहा! भगवान शुद्धस्वभाव के सन्मुख परिणाम-मोक्ष का मार्ग कहा, वह परमहंसस्वरूप है, क्योंकि राग से पृथक् होकर अपने स्वभाव में एकाग्र होती है, वह पर्याय परमहंस है। पर्याय परमहंस है। आहाहा!

मुमुक्षु : चौथे गुणस्थान से...

पूज्य गुरुदेवश्री : चौथे गुणस्थान से परमहंस, इसमें क्या है। विशेष आगे भले हो, वस्तु यहाँ तो-पहले से / चौथे से। उपशमभाव में से। समझ में आया? जरा सूक्ष्म पड़े ऐसी चीज़ है। वस्तु अनादि से क्या चीज़ है, उसके सन्मुख कभी हुआ ही नहीं और सन्मुख होने से धर्म होता है, ऐसा सुनकर कभी रुचि नहीं की; बाहर में भटक-भटककर ऐसा होता है और ऐसा होता है, यात्रा से और पुण्य से, व्रत से और तप से (धर्म होता है - ऐसा मानता है)। ये सब तो विकार का-राग का भाव है और उसमें धर्म मानना, वह तो मिथ्यात्व के भाव का पोषक है। आहाहा! समझ में आया?

ऐसे परमहंस परमात्मध्यान के भावना के नामों की माला... माला अर्थात् एक के पश्चात् एक बहुत नाम। एकदेश व्यक्तिरूप, इस शक्ति की व्यक्ति आयी न भाई अन्दर, भव्यत्व की शक्ति की व्यक्ति। एकदेश व्यक्तिरूप... पूरा आत्मा पूर्ण तो प्रगट होता ही नहीं। मोक्ष भी एकदेश व्यक्तिरूप है। है? एकदेश, एक भाग प्रगट हुआ है।

शुद्धनय के व्याख्यान को यथासम्भव सिद्ध तक लेना चाहिए। यथासम्भव एकदेश शुद्धनय की अपेक्षा ये सब समझना चाहिए। यह तो मोक्षमार्ग की बात है, परन्तु मोक्ष भी एकदेश-एक भाग है। आहाहा! समझ में आया? महासमुद्र पड़ा है न, बहुत बड़ा सागर, उसमें से मोक्ष की पर्याय को एकदेश-एक भाग प्रगट हुआ। सारा तो कभी प्रगट नहीं होता। आहाहा! समझ में आया? ऐसा भगवान आत्मा सहज परमस्वभाव का पिण्ड प्रभु है, उसके सन्मुख पर्याय में एक भाग से प्रगट आनन्द का भाग हुआ, वह भी सरोबर... यहाँ आनन्द का सरोबर कहने में आता है।

भगवान के १००८ नाम से इन्द्र स्तुति करते हैं। समझ में आया? भगवान को केवलज्ञान होता है, इन्द्र आते हैं और समवसरण में १००८ नाम... जिनसेनस्वामी ने भी आदिपुराण (में) १००८ नाम से (स्तुति की है)। क्योंकि १००८ चिह्न हैं, १००८ कलश से स्नान कराते हैं, १००८ नाम से स्तुति करते हैं तो यह भगवान आत्मा की-पर्याय की स्तुति यहाँ (द्रव्यसंग्रह में) ६५-६६ आदि, अनुभवप्रकाश में ४५ (इस तरह) ११० नाम से स्तुति की है। समझ में आया? परमात्मा की स्तुति की है। यह परमात्मा के मार्ग की स्तुति कहने में आती है। आहाहा!

वह परमब्रह्मस्वरूप है। परमब्रह्मस्वरूप-यह निर्मल वीतरागी पर्याय परमब्रह्मस्वरूप (है)। परमब्रह्मस्वरूप तो त्रिकाली वस्तु है परन्तु त्रिकाल को स्पष्ट विषय बनाकर जो पर्याय प्रगट हुई, (वह) परमब्रह्मस्वरूप है। आहाहा!

मुमुक्षु : उसका माहात्म्य द्रव्य से विशेष है?

पूज्य गुरुदेवश्री : माहात्म्य किसने कहा? यह तो उस ओर का झुकाव होकर जो प्रगट हुई, उसे इतना कहने में आता है, ऐसा। माहात्म्य है न? पर्याय का माहात्म्य नहीं? पर्याय का पर्याय के योग्य माहात्म्य नहीं? पर्याय से द्रव्य का माहात्म्य अनन्तगुना है।

मुमुक्षु : भाई ने क्या प्रश्न किया था, समझ में नहीं आया?

पूज्य गुरुदेवश्री : द्रव्य के आश्रय में इस पर्याय का तो निषेध करना है, तो पर्याय की इतनी प्रशंसा क्यों? ऐसा प्रश्न है, नन्दकिशोरजी! समझ में आया? इस पर्याय की प्रशंसा पर्याय की है, वह एक अंश की प्रशंसा है तो परमात्मा की प्रशंसा का क्या कहना! ऐसा कहते हैं।

मुमुक्षु : ऐसा लेना है?

पूज्य गुरुदेवश्री : ऐसा लेना है। समझ में आया?

मुमुक्षु : इसमें तो ऐसे शब्द का प्रयोग किया कि माहात्म्य घटाना है।

पूज्य गुरुदेवश्री : ऐसा कि पर्याय का माहात्म्य इतना क्यों? अभी तक तो द्रव्य का माहात्म्य गाते हैं और पर्याय तो व्यवहारनय का विषय है परन्तु वह स्वभाव का पुत्र.. पुत्र

हुआ न ? भगवान की प्रजा हुई वह। समझ में आया ? पुण्य-पाप का परिणाम तो कलंक है। कुल में कलंकजात पुत्र कहते हैं। यह भगवान..

मुमुक्षु : मोक्ष है परिणाम, इसलिए माहात्म्य नहीं - मोक्ष नहीं हो इसलिए..

पूज्य गुरुदेवश्री : मोक्ष नहीं हो उसका प्रश्न यहाँ है नहीं। यहाँ तो पर्याय ऐसी है, बस! मोक्ष होगा तो होगा, वह तो फिर पर्याय इतने माहात्म्यवाली चीज़ है क्योंकि द्रव्य के पक्ष में चढ़कर अभेद हो गयी। परमब्रह्मस्वरूप है (पर्याय का स्वरूप ऐसा है)। ऐसा समझ में आया ? ऐ रतिभाई! ऐसा सब है। परमब्रह्मस्वरूप है।

वह परम विष्णुरूप है। परम विष्णु व्यापक निर्मल पर्याय ? व्यापक। वास्तव में तो उसका मति और भावश्रुतज्ञान है। लोकालोक और स्वद्रव्य सब उसमें जानने में आते हैं ऐसी पर्याय मति और श्रुत को विष्णुस्वरूप कहने में आता है। आहाहा! समझ में आया ? परन्तु अब इस बार कक्षा में यह भी जरा सुनना। बहुत स्थूल बात सुनते हैं, यह तो सुनना कि उसमें क्या मूल चीज़ तो यह है। आहाहा! समझ में आया ?

वह परम शिवस्वरूप है—ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीन लिये पहले, भाई! ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों लिये। ब्रह्मा, विष्णु और महेश। यह ब्रह्मा, यह परमब्रह्मस्वरूप भगवान आत्मा निर्मलानन्ददशा। शुद्धस्वभाव के सन्मुख, परमपारिणामिकभाव को विषय करके जो पर्याय बनी, रची, हुई, वह परम ब्रह्मस्वरूप, परम विष्णुस्वरूप और परम शिवस्वरूप है। जिसमें उपद्रव बिल्कुल नहीं, विकल्प का उपद्रव नहीं, अकेले आनन्द का, आनन्द की पर्याय का अनुभव है। आहाहा! उसका नाम निश्चयमोक्षमार्ग है। यह कल निश्चयमोक्षमार्ग नाम लिखा, और निश्चयमोक्षमार्गस्वरूप के ये सब नाम हैं।

वह परम बुधस्वरूप है। वे बोद्ध रह गये न वापस। ब्रह्मा, विष्णु और शिव तो आये, परन्तु बुद्ध। आहाहा! 'बुधयति इति बुधः' भगवान आत्मा शुद्ध चैतन्यध्रुव की महिमा करते-करते उसकी जो पर्याय प्रगट हुई, उसकी भी इतनी महिमा है। परम बुद्धस्वरूप है।

वह परम जिनस्वरूप है। लो परम जिनस्वरूप तो द्रव्य था। वास्तव में यह आत्मा है। वास्तविक आत्मा। ३८ गाथा में तो ऐसा कहा - खरेखर / वास्तव में आत्मा ध्रुव, वह वास्तव में आत्मा है परन्तु यहाँ पर्याय, ध्रुव में एकत्व हुई तो पर्याय को भी परम जिनस्वरूप कहने में आता है।

परम निज आत्मा की प्राप्ति का लक्षण का धारक जो सिद्ध, उस रूप है। देखो, यह पर्याय को सिद्ध कहा। परम निज आत्मा-अपना निज आत्मा, उसकी प्राप्ति। देखो, यह प्राप्ति। ए सेठ! प्राप्ति-निज आत्मा की प्राप्ति। अन्तर सन्मुख होने से आत्मा की प्राप्ति होती है। जो अनादि से राग और पर्याय की प्राप्ति थी, वह मिथ्यात्व था। स्वभाव सन्मुख होकर प्राप्ति हुई तो वह तो आत्मा की प्राप्ति हुई। आहाहा!

मुमुक्षु : पहले यही विधि सीखनी?

पूज्य गुरुदेवश्री : यह कला। तुम ऐसे हो, यह अभी यहाँ बतायेंगे।

देखो, वही निरंजनरूप है। देखो! यह उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक तीनों भाव को लागू पड़ता है। आहा!

मुमुक्षु : जो उपशमभाव के नामान्तर हैं?

पूज्य गुरुदेवश्री : सब नाम हैं। शुद्ध-आत्मा-अभिमुख, शुद्धोपयोग और तीन भाव, उनके ये सब नामान्तर हैं, पर्यायमाला (है) माला में बहुत मोती होते हैं न, तो यह पर्यायमाला, एक पर्याय के इतने-इतने नाम। हजारों-लाखों अनन्त नाम हैं। इतना गिनाते हैं-तुम कहते हो न? गिनाते। इतना गिनाते हैं और तो गिनाते हैं ११०-पर्याय के ११० नाम तो गिनाते हैं। देखो! ६५ तो यहाँ हैं।

वह निर्मलस्वरूप का धारक है—कौन? वीतरागी पर्याय, मोक्षमार्ग की पर्याय, धर्म की पर्याय, धर्म पर्याय इसको कहते हैं कि वह सर्व कर्ममलरहित स्वरूप का धारक है। उसमें राग का भाव-व्यवहार का भी बिल्कुल नहीं, कर्म की बात तो भिन्न रह गयी परन्तु विकार का अंश उसमें नहीं, निर्विकल्प आनन्द की पर्याय को यहाँ मोक्षमार्ग कहने में आता है। समझ में आया? आहाहा!

वही स्वसंवेदन ज्ञान है। इस टीका में तदेव-तदेव कहा है और फिर स ऐव - स ऐव कहा है पीछे से। समझे? यह अन्तर क्यों किया होगा? तदेव परमज्योति वहाँ तक तदेव रखा (नपुंसकलिंग हो तो स एव, पुरुषलिंग हो तो तेवो तेवो होवे तो तदेव ऐसा होवे तो स एव, पण्डितजी ने स्पष्टीकरण किया।) ठीक। कहो, वही संवेदन ज्ञान है। टीका में दो शब्द एक में तदेव-परमज्योति, वहाँ तक तदेव आयेगा और फिर आयेगा सएव शुद्धात्मानुभूति, यहाँ से अनुभूति... स एव शुद्धात्मानुभूति। अच्छा? समझ में आया?

भगवान आत्मा–अपने ध्रुवस्वरूप का विषय बनाकर, ध्येय बनाकर जो वीतरागी सम्यग्दर्शन, ज्ञानचारित्र की पर्याय हुई, वह स्वसंवेदन हुआ, वह राग का वेदन था, सो छूट गया। शुद्धात्मानुभूति अर्थात् द्रव्य का अनुभव नहीं होता परन्तु द्रव्य की पर्याय का अनुभव है उसे द्रव्य का अनुभव कहने में आता है। समझ में आया? जो ऐसे राग का वेदन था, विकल्प था; इस अपेक्षा से निर्मल पर्याय हुई, उसे द्रव्य का वेदन हुआ (अनुभव हुआ) ऐसा कहने में आता है। समझ में आया?

'वही परम तत्त्वज्ञान है' शुद्धात्मा का स्वरूप परम तत्त्वज्ञान है। देखो! वही परम तत्त्वज्ञान.. आहाहा! सब जान लिया उसने, अपना आत्मा अखण्डानन्द प्रभु सम्यग्दर्शन में प्रतीति में आ गया और वही परम तत्त्वज्ञान कहने में आता है। उसको वह परम तत्त्वज्ञान हो गया। समझ में आया?

और 'वही शुद्धात्मा का दर्शन है' लो, यह शुद्धात्मा का दर्शन! आहा! इस उपशमभाव में शुद्धात्मा का दर्शन कहा, भाई! उपशमभाव को शुद्धात्मा का दर्शन कहा। उपशमभाव को शुद्ध उपयोग क्यों कहा? अरे भगवान! क्या करता है? लोगों को मूल निज परमात्मा क्या चीज़ है, उसकी खबर नहीं और अपनी दृष्टि से शास्त्र पढ़े, उसमें से अर्थ के अनर्थ निकाले। समझ में आया? वही शुद्धात्मा का दर्शन, यह जो मोक्षमार्ग हुआ–शुद्धात्मा अभिमुख परिणाम (हुआ), वही शुद्धात्मा का दर्शन। आहाहा! भगवान का साक्षात्कार हुआ..

मुमुक्षु : अरिहन्त भगवान का?

पूज्य गुरुदेवश्री : अरिहन्त भगवान का। आत्मा अरिहन्त है न? आत्मा ही अरिहन्त है, दूसरा कौन अरिहन्त है? समझ में आया?

वह आया था न? तत्त्वानुशासन में आया था। तत्त्वानुशासन में नागसेन मुनि कहते हैं। एक प्रश्न हुआ कि तुम अरिहन्त का ध्यान करते हो तो अरिहन्त तो तुम हो नहीं, तुम अरिहन्त का ध्यान करते हो, अरिहन्त का ध्यान है नहीं तो तुम्हारा ध्यान मिथ्या हुआ, झूठा हुआ। अरे! सुन तो सही! तत्त्वानुशासन में (कहा है) अरिहन्त (पद) तो हमारी आत्मा में पड़ा है। अरिहन्तस्वरूप हमारा आत्मा है, उसका हम ध्यान करते हैं और वह ध्यान निष्फल नहीं है। आहाहा! ध्यान निष्फल नहीं है। आनन्द का वेदन होता है; इसलिए

अरिहन्त का ध्यान वह हमारा बराबर है। समझ में आया? हमारा स्वरूप ही अरिहन्त है। आत्मा का स्वरूप ही अरिहन्त है। उस अरिहन्त का ध्यान किया तो उस अरिहन्त के ध्यान से अपना ध्यान हुआ। यह अरिहन्त, वह अरिहन्त नहीं।

तत्त्वानुशासन में (ऐसा कहा है) तत्त्वानुशासन पुस्तक है। उसे नागसेन मुनि ने बनाया है। तो नागसेन मुनि ने ऐसा कहा कि भाई! कोई प्रश्न करता है कि तुम अरिहन्त का ध्यान करते हो तो अभी अरिहन्त तो है नहीं, तुम अरिहन्त का ध्यान करते हो अभी अरिहन्त तो है नहीं तो कैसे? तुम्हारा ध्यान तो निरर्थक हुआ। अरे! सुन तो सही! निरर्थक नहीं हुआ। हमारे भगवान में, जो अरिहन्त को पर्याय प्रगट होनी है ऐसी अनन्त पर्यायें हमारे में है। हम अरिहन्त के अरिहन्त हैं। हमारे द्रव्य का ध्यान करने से हम अरिहन्त का ध्यान करते हैं और (वह) निष्फल नहीं है क्योंकि यदि अरिहन्त का ध्यान निष्फल हो तो आनन्द नहीं आता (किन्तु) हमें तो आनन्द आता है, अतीन्द्रिय आनन्द आता है। अत: हम बराबर अरिहन्त का ध्यान करते हैं।

मुमुक्षु : बराबर, झूठ-मूठ नहीं।

पूज्य गुरुदेवश्री : झूठ-मूठ नहीं। ऐसा उसमें लिखा है। समझे? ए नन्दकिशोरजी! उसमें लिखा है, हों! वह झूठा साहित्य नहीं है, झूठ-मूठ नहीं है, झूठ-मूठ हो तो आनन्द कैसे आया? समझ में आया? यह तो अलौकिक बातें हैं भाई! यह तो परमेश्वर के घर की, परमेश्वर को पहुँचने की बातें हैं। बाकी सब बातें जगत की हैं। कहो, समझ में आया? आहाहा! उस भगवान का हम ध्यान करते हैं, हम भगवान हैं, हमारा भगवान हमारे पास है। पास है ऐसा नहीं, परन्तु हम ही हैं। ए नन्दकिशोरजी! क्योंकि ऐसी अरिहन्त की अनन्त पर्याय केवलज्ञानादि और ऐसी-ऐसी अनन्त-अनन्त केवलज्ञान की, आनन्द की पर्याय ऐसी अरिहन्त की आनन्द की पर्याय मेरे गर्भ में पड़ी है, पेट में पड़ी है। हम गर्भ का ध्यान करते हैं तो उसमें आनन्द का प्रसव होता है। समझ में आया? आहाहा!

'वही परम अवस्थास्वरूप है'। उत्कृष्ट अवस्था। देखो, वापस अवस्था, यह तो निश्चयमोक्षमार्ग के नाम हैं न?

'वही परमात्मा का दर्शन है' (पहले) वह शुद्धात्मा का दर्शन कहा था। (अब)

परमात्मा का दर्शन, सम्यग्दर्शन में उपशमभाव में, क्षयोपशमभाव में, क्षायिकभाव में जो पर्याय प्रगट हुई, वह परमात्मा का दर्शन है। अनादि का क्षयोपशम, वह क्षयोपशम यहाँ नहीं लेना, हों! अनादि का क्षयोपशमभाव है, वह तो निगोद को भी है, अभव्य को भी है; वह क्षयोपशम नहीं। अपने द्रव्य का आश्रय करके जो आनन्द की दशा उत्पन्न हुई – ऐसे ज्ञान और आनन्द को यहाँ क्षयोपशमभाव कहते हैं। आहाहा! अनादि का क्षयोपशमभाव तो निगोद में भी है। निगोद में ये तीन भाव नहीं हैं।

मुमुक्षु : साधकदशा के।

पूज्य गुरुदेवश्री : हाँ। समझ में आया?

'वही परम तत्त्वज्ञान है' पहले परम तत्त्वज्ञान आया था, फिर वही आया भाई! परम तत्त्वज्ञान, परम तत्त्वज्ञान फिर से आ गया।

'वही शुद्ध आत्मज्ञान है' उसे शुद्ध आत्मज्ञान कहा।

'वही ध्यान करनेयोग्य शुद्ध पारिणामिकभाव है, उस रूप है।' ऐई! पारिणामिकभाव कह दिया वापस। पारिणामिकभाव त्रिकाल सहजभाव भगवान एकाकार होकर पर्याय में प्रगट हुआ, वह पारिणामिकभाव है, उसका है, उसकी पर्याय है। देखो! अपेक्षा से कथन है भाई! वीतराग का मार्ग बहुत गम्भीर है। ऐसे ऊपर-ऊपर से कोई पढ़ ले – ऐसी बात नहीं है।

'वह ध्यानभावस्वरूप है' वह ध्यानभावस्वरूप। आहाहा!

'वही शुद्धचारित्र'। इस उपशमभाव में भी शुद्ध चारित्र कहा, इतना चारित्रस्वरूप आचारणरूप हुआ न? आहाहा!

'वही अन्तरंग का तत्त्व है' अन्तरंग तो ज्ञायकतत्त्व है, उसके आश्रय से – स्पर्श करके जो निर्मल मोक्षमार्ग पर्याय प्रगट हुई, उसे अन्तरंग तत्त्व कहने में आया है। विकल्प-विकल्प, वह बाह्य तत्त्व है।

जहाँ नियमसार में पर्याय को बहिर्तत्त्व कहा था, वह यहाँ अपेक्षा से अन्तःतत्त्व कहते हैं। यहाँ अन्तरंग ज्ञायकभाव ध्रुव में से स्पर्श करके जो पर्याय हुई, इस अपेक्षा से उसे अन्तरंग तत्त्व कहने में आया है। द्रव्य की अपेक्षा से बहिर्तत्त्व है, परन्तु राग जो बहिर्तत्त्व

है, उससे छूटकर जो अन्तरंग वीतरागी पर्याय हुई, इस अपेक्षा से अन्तरंग तत्त्व कहने में आया है। आहाहा! समझ में आया? धीरे-धीरे पाचन होता है न! हलवे-हलवे (धीरे-धीरे) ग्रास भरे..

मुमुक्षु : हलवे-हलवे अर्थात्?

पूज्य गुरुदेवश्री : धीरे-धीरे। मैसूरपाक खाते हैं न? चार सेर घी पिलाया। मैसूर समझे न, मैसूर, मैसूर? एक सेर आटा और चार सेर घी, मैसूर वह भी थोड़ा-थोड़ा खाते हैं। यह अनुभव भी धीरे-धीरे समझने की चीज़ है, एकदम ग्रास उतार दे, ऐसी चीज़ नहीं है। समझ में आया?

क्या कहते हैं? परमतत्त्व है 'वही परमतत्त्व है' पर्याय को परमतत्त्व कहा। 'वही शुद्ध आत्मद्रव्य है' है न? उस शुद्ध आत्मद्रव्य की पर्याय को भी अभेद करके शुद्ध आत्मद्रव्य कह दिया है। आहाहा!

'वही परम ज्योति है' लो! यहाँ तक तो 'तदैव तदैव' आया है पाठ में। परमज्योति ज्ञानमूर्ति भगवान पर्याय में प्रगट हुआ। सम्यग्दर्शन धर्मपर्याय प्रगट हुई, वह परमज्योति हुई, परमज्योति प्रगट हुई।

'वह शुद्ध आत्मा की अनुभूति है।' लो! यहाँ से 'सएव सएव' आया संस्कृत में। भाई कहते हैं, इसकी भाषा से क्या कहा? यह शुद्ध आत्मद्रव्य है, लो! शुद्ध आत्मा की अनुभूति है। 'वही शुद्धात्मा की प्रतीति है।' देखो! यह सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र जो मोक्षमार्ग है, वही आत्मा की प्रतीति है। समझ में आया?

'वही आत्मा की संविति अर्थात् साक्षात्कार है' वह आत्मा का साक्षात्कार-सम्यग्दर्शन हुआ, उपशमभाव हुआ, क्षयोपशमभाव हुआ, उसको यहाँ आत्मा का साक्षात्कार कहते हैं, परमेश्वर की भेंट हुई। ऐई पण्डितजी! ऐसा महँगा मार्ग गजब किया यह तो। समझ में आया?

'वही निज आत्मस्वरूप की प्राप्ति है' निज आत्मस्वरूप की पर्याय में प्राप्ति हुई तो उस पर्याय को ही निज आत्मस्वरूप की प्राप्ति कहने में आया?

'वही नित्य पदार्थ की प्राप्ति है' त्रिकाल भगवान जो नित्य है। नित्य तो पर्याय में

शुद्धता से भान हुआ, वेदन हुआ तो वह शुद्धता की पर्याय, तो यह त्रिकाल शुद्ध है तो उस पर्याय को भी नित्य पदार्थ की प्राप्ति कह दिया है। समझ में आया?

'वही परम समाधि है' परम समाधि... समाधि यह बाबा लगाते हैं वह नहीं, हों! भगवान आत्मा चिदानन्द का पिण्ड, उसका अन्तर अनुभव करके जो पर्याय प्रगट हुई, उसे यहाँ परम समाधि कहा गया है।

'वही परम आनन्द है' मोक्षमार्ग, वह परम आनन्द है। मोक्षमार्ग में दुःख नहीं। कोई तो कहते हैं, आहाहा! मुनियों को कितना कष्ट सहन करना पड़ता है। अरे! कष्ट सहन करना पड़े, वह धर्म है? वह मोक्षमार्ग है? कष्ट में तो राग आता है, आर्तध्यान होता है; मोक्षमार्ग तो परम आनन्दस्वरूप है। अतीन्द्रिय आनन्द का-शान्ति का वेदन, उसका नाम सम्यग्दर्शन-ज्ञान और चारित्र कहते हैं। समझ में आया?

'वही नित्य आनन्द है' नित्य आनन्द, लो! है तो नित्यानन्द भगवान, परन्तु पर्याय नित्य में से प्रगट हुई तो (उसे नित्यानन्द कह दिया है।) कल्पित सुख तो अनित्य है बाह्य स्त्री में और पैसा में धूल में मान ले, वह तो मिथ्यात्वभाव है। समझ में आया? कहो, सेठ! यह तुम्हारे बँगले और मकान और पैसे में सुख है। चालीस-चालीस मोटरें, बीड़ियों में घूमती है, वह सुख है। धूल में भी नहीं है। कल्पना है, दुःख है, दुःखी है। यह भगवान आत्मा आनन्द के कन्द को जब पर्याय मिली, नित्यानन्द हो गया, जाओ। समझ में आया?

'वही स्वभाव से उत्पन्न आनन्द है' लो! स्वभाव से उत्पन्न हुआ आनन्द।

'वही सदानन्द है' सदानन्द-सदानन्दी भगवान प्रगट हुए। समझ में आया? भगवान आत्मा सदानन्द की मूर्ति है। इसको स्पर्श करके-विषय बनाकर ध्येय बनाकर, जो पर्याय प्रगट हुई, उसे यहाँ सदानन्द कहने में आता है।

'वही शुद्ध आत्मपदार्थ के पठनरूप स्वरूप का धारक है' वही आत्मपदार्थ पठन सुख का धारक-उस आत्मपदार्थ का पठन किया उसने। अन्तर की अनुभव दशा प्रगट हुई, उसने आत्मा का पठन किया।

मुमुक्षु : वाह रे वाह स्वाध्याय..

पूज्य गुरुदेवश्री : वह बाद में - स्वाध्याय बाद में लेंगे। (वही परम स्वाध्याय है)

यह तो पठनस्वरूप का धारक है, वहाँ तक.. वही शुद्ध आत्मपदार्थ के पठनरूप स्वरूप का धारक है। यह पर्याय में आत्मा का पठन किया। आहाहा! शास्त्र-पठन तो सब विकल्प है। एई! दिगम्बर सन्तों की मस्ती है, देखो! समझ में आया? सम्यग्दर्शन में भी ऐसी मस्ती है, ऐसा स्पष्टीकरण करते हैं।

'वही परम स्वाध्याय है' यह शास्त्र स्वाध्याय तो विकल्प है। स्व-अध्याय अपना निजानन्दस्वरूप का अन्तर एकाग्र होकर अनुभव करना, वह स्वाध्याय है।

'वही निश्चयमोक्ष का उपाय है' लो! निश्चयमोक्षमार्ग के ही नाम चलते हैं। वह निश्चय-सच्चा मोक्ष का उपाय है।

'वही एकाग्र चिन्ता निरोध है' अन्तर में एकाग्र होकर चिन्ता का निरोध करके शान्ति का वेदन।

'वही परम ज्ञान है' - यह। 'वही शुद्ध उपयोग है' लो, आया, उसमें नाम आया न उपयोग का अपने, वह शुद्ध उपयोग।

'वह परम योग' वह परम योग है ध्यान। शुद्धस्वरूप में एकाग्र हुआ, वही कहते हैं परम योग है। योग दूसरा क्या योग? योग करो, ध्यान करो, किसका? परन्तु वस्तु बिना? समझ में आया? कितने ही कहते हैं शून्य हो जाओ। लो, रजनीश ने भी अभी लिखा तारणस्वामी का। सन्त तारण शून्य होने का कहते थे। ए धन्नालालजी! ऐसा आया है। वह और नहीं हुआ और यहाँ नाम दिया। पत्र में आया है अपनी बात पुष्टि करने के लिये, सन्त तारण शून्य होने को कहते हैं (ऐसा उसने लिखा)। परन्तु तू कहता है वह शून्य नहीं। सन्त तारण तो कहते हैं ध्रुवस्वरूप को ध्येय बनाकर विकल्प से शून्य हो जाओ, वह शून्य (का आशय है)। एई! शून्य हो जाओ, शून्य हो जाओ। (तत्त्वानुशासन) उस गाथा की बात हुई थी।

'वही परम भूतार्थ है' वही भूतार्थ है, भूतार्थ तो ध्रुव है परन्तु उसके आश्रय से सम्यग्दर्शन-ज्ञान का अनुभव हुआ, यह उसको भी भूतार्थ कहने में आया है। भाई! बन्ध अधिकार में आता है न? भूतार्थ मोक्षमार्ग-अभूतार्थ मोक्षमार्ग आता है। बन्ध अधिकार (आता है)। मोक्षमार्ग की पर्याय है, उसको भी भूतार्थ मार्ग, मोक्षमार्ग बन्ध अधिकार में

(आता है)। समझ में आया? रागादि हैं, वे अभूतार्थ हैं, मोक्षमार्ग है ही नहीं। भूतार्थ मोक्षमार्ग अपना स्वभाव चैतन्यज्ञायक का आश्रय करके शक्ति की व्यक्तता प्रगट हुई, उस भाव को, मोक्षमार्ग को भूतार्थमार्ग कहने में आया है। ओहोहो! दिगम्बर आचार्यों ने चारों ओर से जहाँ से लो वहाँ से पूर्वापर अविरोधमार्ग खड़ा होता है, कोई भी ग्रन्थ, कोई भी शास्त्र (लो) समझ में आया?

'वही परमार्थ है' लो! अन्दर आत्मा के-ज्ञायकभाव के आश्रय से जो भाव हुआ, वह परमार्थ है, वही निश्चयनय के अनुसार एक परम आत्मा का-आनन्द का अनुभव सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, शुद्ध आत्मा अभिमुख परिणाम-उसे ज्ञान कहते हैं, उसे दर्शन कहते हैं, उसे चारित्र कहते हैं, उसे तप कहते हैं। उसे वीर्यरूप आचार कहते हैं- ये पाँच आचार उसको कहते हैं। समझ में आया? ये विकल्प के आचार और ये देह के आचार तो कहीं बाहर रह गये।

'वही समयसार है' लो, कारणसमयसार है न? मोक्ष का कारण-वह समयसार है। त्रिकाल को समयसार कहते हैं, पर्याय को-मोक्षमार्ग को कारणसमयसार कहते हैं और पूर्ण को कार्यसमयसार कहते हैं, तो यहाँ वही समयसार है। 'वही अध्यात्मसार है' यह अध्यात्मसार, हों! समझ में आया? यशोविजयजी ने अध्यात्मसार बनाया है, समयसार देखकर उसने अपना बनाया है। वह तो भगवान सर्वज्ञ परिपूर्ण ध्रुवस्वभाव, परमस्वभाव का आश्रय करके जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र हुआ, आनन्द का वेदन, वीतराग अनुभव जो आनन्द हुआ, उसको अध्यात्म का सार कहते हैं। समझ में आया?

'वही समता आदि निश्चय से आवश्यक है' यह उसको सामायिक कहते हैं, यह वीतराग सामायिक इसको कहते हैं। आहाहा! बाकी विकल्प कहते हैं। 'इरियाविहीया मिच्छामि दु:क्कडं' ऐसा करते-करते दो घड़ी हो गया, वह सामायिक, वह सामायिक नहीं है। समझ में आया? अपने अखण्ड परमात्मा में जम जाना, वही पर्याय जो प्रगट हुई, वह परम वीतराग सामायिक है। समझ में आया? लो, इस मोक्षमार्ग को वीतराग सामायिक कहते हैं।

'वही परम शरण उत्तम मंगलं है' लो, शरण उत्तम, मंगल तीनों भगवान आत्मा

ज्ञायकभाव, आचार्य स्वयं कहते हैं और मानते हैं न, यहाँ देखो न! शुद्ध उपयोग इत्यादि 'पर्यायसंज्ञा जानना' अपने यह चलता है, इस पन्ने में यह चलता है, ये सब नाम उसमें कहने का अभिप्राय है। कैसे नाम थे उसमें जान लेना। यहाँ कितना कहें। अपने चलता है न उसमें? ऐ चन्दुभाई! इत्यादि... इत्यादि कहना...

'वही परम शरण, उत्तम और मंगल है' अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, यह सब व्यवहार है। भगवान आत्मा पूर्णानन्दस्वरूप में-ध्रुव में एकाग्र होकर जो वीतरागी पर्याय प्रगट हुई वही परम मांगलिक, परम उत्तम और परम शरण है।

'वही केवलज्ञान उत्पत्ति का कारण है' यह मोक्षमार्ग, केवलज्ञान की उत्पत्ति का कारण है। 'वही समस्त कर्मों के नाश का कारण है' यह मोक्ष का मार्ग, कर्मों के नाश का कारण है। व्यवहाररत्नत्रय, वह मोक्ष का मार्ग है नहीं।

'यही निश्चयनय की अपेक्षा से दर्शन-ज्ञान-चारित्र-तप - चार आराधना' यह चार आराधना भी उसे कहते हैं। आहाहा!

'वही परमात्मा की भावनारूप है' लो.. भावना, भाई! उस भावना का अर्थ करते हैं न? भावना अर्थात् चिन्तवना, कल्पना। यहाँ भावना का अर्थ परमार्थनय से अन्तर अनुभव, वह परमार्थ की भावना है। रतनचन्दजी अर्थ करते हैं, वह प्रवचनसार में चलता है न? श्रावक को सामायिक में शुद्धभावना होती है-ऐसा पाठ है तो भावना का अर्थ करते हैं (कि) वह तो शुद्धभावना भावे-परन्तु शुद्धभावना होती है - ऐसा नहीं। शुद्धभावना का अर्थ शुद्ध उपयोग सामायिक में होता है। समझ में आया? अर्थ में बहुत बदलाव! भावना का अर्थ-वस्तु जो ध्रुवस्वरूप है, उसरूप पर्याय में भाना, वीतरागी पर्याय एकाग्र होकर (भाना), उसका नाम भावना अर्थात् चिन्तवना करो ऐसा आत्मा, ऐसा आत्मा ऐसा, परन्तु वह भावना नहीं है।

मुमुक्षु : आतमभावना भावतां....

पूज्य गुरुदेवश्री : वह आत्मभावना आती है न श्रीमद् में। 'आतमभावना भावतां जीव लहै केवलज्ञान रे' यह रटे अवश्य परन्तु आत्मा क्या और कौन है? यह कुछ खबर नहीं होती।

आत्मा अनन्त आनन्द का कन्द सच्चिदानन्द प्रभु है, इसकी भावना अर्थात् एकाग्रता करते-करते केवलज्ञान होता है। दूसरा कोई केवलज्ञान का उपाय / कारण-फारण है नहीं। ऐइ! राजकुमारजी! समझ में आता है? पहले ग्रास में ऐसा कठिन आया है। ऐइ! मनसुखभाई!

मुमुक्षु : पहले ग्रास में मैसूरपाक आया, ऐसा।

पूज्य गुरुदेवश्री : मैसूर आया। मैंने ऐसा कहा, वह कहाँ कहा?

मुमुक्षु : पोला लगा....

पूज्य गुरुदेवश्री : पोचा (पोला) लगा। यह पहले-पहले आया है। हमारे पालेज रहता है न? पालेज का है। समझ में आया?

'शुद्ध आत्मा की भावना से उत्पन्न सुख की अनुभूतिरूप परम कला' लो! यह परम कला है। कलाबाज आत्मा जागृत हुआ, यह परम कला है-ऐसा कहते हैं। बाकी दुनिया की कला-फला सब निरर्थक चार गति में भटकनेवाली है। शोभालालजी! तम्बाकू ऐसी है और वैसी है, ऐसी है बीड़ी और ऐसी है तम्बाकू, ऊँची-ऊँची तम्बाकू पीवे, यहाँ आवे तब थोड़ी दुर्गन्ध आती हो। समझ में आया? शुद्ध आत्मा की अनुभूति, वही परम कला है, वही परम कला। हम तो जंगल में रहते हैं न? नाक में, दूर हो तो भी बहुत गन्ध आती है। कोई बीड़ी पीकर आवे और तम्बाकू ऐसा हो नहीं, शरीर में भी वह लगाता है, गन्ध-बन्ध क्या कहलाता है? इत्र-इत्र दूर से गन्ध मारता है।

'वही दिव्य कला है' ओहोहो! दिव्य कला आत्मा अन्दर परमात्मा, सर्वज्ञ परमात्मा ने कहा, ऐसा आत्मा का अनुभव करना, वह अनुभव दिव्य कला है।

'वही परम अद्वैत' लो, अद्वैत आया। वे वेदान्त कहते हैं, वैसा नहीं, हों! आहाहा! विकल्प का राग छोड़कर एकाकारस्वरूप है, उसमें एकाकार होना, वह परम अद्वैत है। समझ में आया?

'वही परम अमृतस्वरूप परम धर्मध्यान है'-ऐई, देखो भाई! धर्मध्यान को तो यह कहा। वे कहते हैं धर्मध्यान शुभोपयोग में है। पढ़ने में हेतु है इसमें, जरा, वे लोग कहते हैं। धर्मध्यान शुभभाव में होता है और शुद्ध उपयोग में शुक्लध्यान होता है। देखो, यहाँ कहते हैं। 'वही अमृतस्वरूप परम धर्मध्यान है' आहाहा! उपशमभाव में, क्षयोपशमभाव में,

क्षायिकभाव में; शुद्धात्मा-अभिमुखपरिणाम, शुद्धोपयोग वह शुद्ध अमृतस्वरूप है, वह धर्मध्यान है। समझ में आया? उसका नाम धर्मध्यान, विकल्प से विचारना कि भगवान ऐसा कहते हैं-ऐसा विकल्प, वह धर्मध्यान नहीं है। आहाहा!

वही शुक्लध्यान है - उत्कृष्ट उपयोग हो जाये, वह शुक्लध्यान। यहाँ तीनों भाव लिये न?

'वही रागादिरहित निर्विकल्प ध्यान है' वह आत्मा का विकल्परहित ध्यान है। 'वही निष्कल ध्यान है' निष्कल अर्थात् शरीररहित का ध्यान है।

'वही परम स्वास्थ्य-परम निरोगता' परम स्वास्थ्य, वीतराग की मूर्ति भगवान का साक्षात्कार करके निर्मल पर्याय हुई, वह परम स्वास्थ्य है। निरोग हुआ, निरोग हुआ। राग-द्वेष था, वह रोग था। यह शुभ रत्नत्रय का राग, वह रोग है। आहाहा! ऐ मूलचन्दभाई!

मुमुक्षु : किसी-किसी को किसी काल में प्रयोजनवान है।

पूज्य गुरुदेवश्री : किसी-किसी को प्रयोजनवान क्या कहा? जानना प्रयोजनवान, किसी-किसी को किसी काल में कहा, करना प्रयोजनवान है-ऐसा नहीं कहा है। सेठ बारहवीं गाथा रखते हैं-किसी-किसी को व्यवहार प्रयोजनवान। किसी-किसी को किसी काल में किसी को किसी काल में अर्थात् साधकजीव को जब तक सिद्ध न हो, तब तक उसकी पर्याय में अल्प निर्मलता है, रागादि है, वह जानने में आता है, वह प्रयोजनवान (का आशय है); करना प्रयोजनवान-ऐसा नहीं है। समझ में आया? अब इतने बोल हो गये हैं, थोड़े बाकी हैं।

'वही परम वीतरागतारूप है' लो! 'परम समतास्वरूप है' 'वही एकत्व है', लो, एकत्व। 'परम तेज ज्ञान' और 'वह परम समरसीभाव' लो, पैंसठ बोल हुए। उसे मोक्ष का मार्ग कहते हैं।

(**श्रोता :** प्रमाण वचन गुरुदेव!)